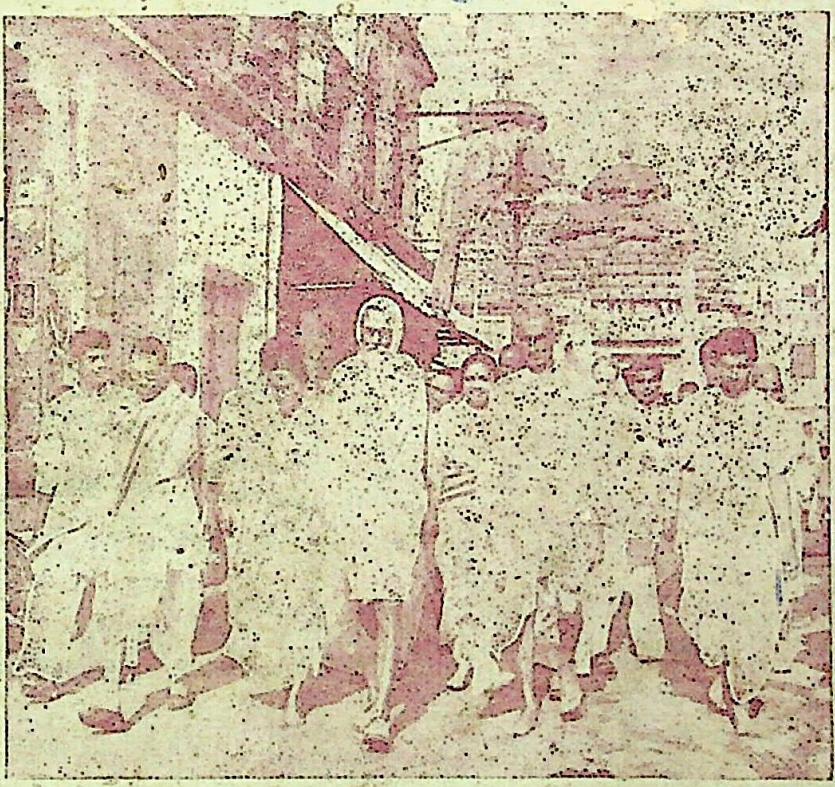

भगवान के दरबार में

विनोबा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान् के दरबार में !

लेखक :

दीनानाथ

प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ,
वर्धा (म० प्र०)

दूसरी बार : २०,०००
कुल प्रतियाँ : ४०,०००
मार्च, १९५६
मूल्य : दो आना

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
रा ज घा ट, का शी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशकीय

गत ता० २१ मार्च, १९५५ के दिन विनोबाजी जगन्नाथ-मन्दिर (पुरी) के दर्शनार्थ गये थे। उस दिन उनके साथ एक फ्रेंच महिला भी थीं। किन्तु मन्दिर के संचालकों ने उन्हें उस फ्रेंच महिला के साथ भीतर जाने देने से इनकार कर दिया। वहाँ यद्यपि हरिजन-प्रवेश निषिद्ध नहीं है, तथापि अहिंदुओं का प्रवेश निषिद्ध है और ऐसी सूचना वहाँ अंकित है। भगवान् के दरबार में भाव-भक्ति से मानव मात्र को जाने का अधिकार है—ऐसा माननेवाले विनोबा उस फ्रेंच महिला को बाहर छोड़कर भीतर जा नहीं सकते थे। इसलिए वे बिना दर्शनों के ही लौट आये।

इसी सिलसिले में दिनांक २१,२२ और २३ मार्च, १९५५ को जगन्नाथपुरी में विनोबाजी ने जो प्रवचन किये, भगवान् के दरबार में जो निवेदन किया—उनका यह संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। इन प्रवचनों में विनोबाजी ने धर्मतत्त्व और धर्म-समन्वय एवं उपासना की पार्श्वभूमि को भिन्न-भिन्न तरीकों से समझाया है। भारतीय धर्म-परम्पराओं के विकास-क्रम और समन्वय की दृष्टि से ये प्रवचन कितने महत्त्वपूर्ण हैं, कहने की आवश्यकता नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रम

१. धर्म-स्थानों को जेल मत बनने दीजिये ४–११

हिन्दू-धर्म ४
संस्कार के प्रभाव में ५
हिन्दू-धर्म को खतरा ५
सनातनियों द्वारा ही धर्म-हानि ७
मनु का धर्म मानवमात्र के लिए ८
क्रोध नहीं, दुःख ९
देश की भी हानि १०

२. सच्ची धर्म-दृष्टि १२–१५

गूढ़वाद रूढ़वाद बन गया १२
भक्ति-मार्ग का विकास १४
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी १४

३. समन्वय पर प्रहार मत होने दीजिये १६–१९

सर्वोदय की दृष्टि १६
उपासना के बंधन नहीं १७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म-स्थानों को जेल मत बनने दीजिये

जगन्नाथपुरी,
२१ मार्च, '५५

हिन्दू-धर्म

बहुत लोगों को मालूम हुआ होगा कि आज सुबह हम जगन्नाथ के दर्शन के लिए मन्दिर तक गये थे और वहाँ से हमको वापस लौटना पड़ा। हम तो बहुत भक्ति-भाव से गये थे। हमारे साथ एक फ्रेंच बहन भी थी। अगर वह मन्दिर में नहीं जा सकती है, तो फिर हम भी नहीं जा सकते हैं, ऐसा हमको हमारा धर्म लगा। हमने तो हिन्दू-धर्म का बचपन से आज तक सतत अध्ययन किया है। ऋग्वेद आदि से लेकर रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गांधी तक धर्म-विचार की जो परंपरा यहाँ पर चली आयी है, सबका हमने बहुत भक्ति-भावपूर्वक अध्ययन किया है। हमारा नम्र दावा है कि हिन्दू-धर्म को हम जिस तरह समझे हैं, उस रूप में उसके नित्य आचरण का हमारा नम्र प्रयत्न रहा है। आज हमको लगा कि उस फ्रेंच बहन को बाहर रखकर हम अन्दर जाते, तो हमारे लिए बड़ा अधर्म होता। हमने वहाँ के अधिष्ठाता से पूछा कि क्या इस बहन के साथ हमको अन्दर प्रवेश मिल सकता है? जवाब मिला कि नहीं मिल सकता। तो, भगवान् की जगह उन्हींको भक्ति-भाव से प्रणाम करके हम वापस लौटे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्कार के प्रभाव में

जिन्होंने हमको अन्दर जाने देने से इनकार किया, उनके लिए हम कौन-सा शब्द इस्तेमाल करें, यही नहीं सूझ रहा है। इतना ही कहते हैं कि उनके लिए हमारे मन में किसी प्रकार का न्यून भाव नहीं है। मैं जानता हूँ कि उनको भी दुःख हुआ होगा, परन्तु वे एक संस्कार के वश थे, इसलिए लाचार थे। उनको इसलिए हम ज्यादा दोष भी नहीं देते। इतना ही कहते हैं कि हमारे देश के लिए और हमारे धर्म के लिए यह बड़ी ही दुःखदायक घटना है। हमने कल के व्याख्यान में ही जिक्र किया था कि बाबा नानक को यहाँ पर मंदिर के अन्दर जाने का मौका नहीं मिला था और बाहर ही से उन्हें लौटना पड़ा था। लेकिन वह तो पुरानी घटना हुई। चार-साढ़े चार सौ साल पहले की बात थी। हम आशा रखते थे कि अब वह बात फिर से नहीं दुहरायी जायगी।

हिन्दू-धर्म को खतरा

हमारे लिए सोचने की बात है कि वह जो फ्रेंच बहन हमारे साथ आयी, वह कौन है? वह अहिंसा में और मानव-प्रेम में विश्वास रखनेवाली एक बहन है और गरीबों की सेवा के लिए जो भूदान-यज्ञ का काम चल रहा है, उसके लिए उसके मन में बहुत आदर है। इसलिए वह देखने के वास्ते हमारे साथ घूम रही है। आपको मालूम है कि महाराज युधिष्ठिर के लिए जब स्वर्ग का द्वार खुल गया था, और उनके साथी को अन्दर जाने से मना किया, तो वे भी अन्दर नहीं गये। वह जो बहन हमारे साथ घूम रही है, हम समझते हैं कि परमेश्वर की भक्ति उसके मन में दूसरे किसीसे कम नहीं है। हमारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भागवत-धर्म ने तो यह दावा किया है कि जिसके हृदय में ईश्वर की भक्ति है, वह ईश्वर का प्यारा है, चाहे वह किसी भी जाति का या किसी भी धर्म का क्यों न हो। ब्राह्मण भी क्यों न हो और बहुत-सारे दुनिया के गुण उसमें हों, तो भी उसमें यदि भक्ति नहीं है, तो उससे वह एक चांडाल भी श्रेष्ठ है, जिसके हृदय में भक्ति है। भागवत-धर्म और उसकी प्रतिष्ठा उड़ीसा में सर्वत्र है। उड़िया भाषा का सर्वोत्तम ग्रंथ है, जगन्नाथदास का भागवत। जगन्नाथ-मंदिर के लिए भी—नानक की पुरानी बात छोड़ दीजिये—परन्तु, यह ख्याति रही कि यहाँ पर बड़ा उदार वैष्णव-धर्म चलता है। आप लोगों को समझना चाहिए कि इन दिनों हर कौम की और हर धर्म की कसौटी होने जा रही है। जो संप्रदाय, जो धर्म उस कसौटी पर टिकेंगे, वे ही टिकेंगे, बाकी के नहीं टिक सकते। अगर हम अपने को चहार-दीवारी में बन्द कर लेंगे, तो हमारी उन्नति नहीं हो सकेगी और जिस उदारता का हिन्दू-धर्म में विस्तार हुआ है, उसकी समाप्ति हो जायगी। धर्मविचार में उदारता होनी चाहिए। समझना चाहिए कि जो भी कोई जिज्ञासु हो, उसके सामने अपना विचार रखना और प्रेम से उससे वार्तालाप करना भक्त का लक्षण है। जैसे दूसरे धर्मवाले यहाँ तक आगे बढ़ते हैं कि अपनी बातें जबरदस्ती दूसरों पर लादते जाते हैं, वैसा तो हमको नहीं करना चाहिए। परन्तु हमारे मंदिर, हमारे ग्रंथ, सब जिज्ञासुओं के लिए खुले होने चाहिए। हमारा हृदय सबके लिए खुला होना चाहिए, मुक्त होना चाहिए। अपने धर्म-स्थानों को एक जेल के माफिक बना देना हमारे लिए बड़ा हानिकारक होगा और उनमें सज्जनों को प्रवेश कराने में हिचकिचाहट रही, तो मन्दिरों के लिए आज जो थोड़ी-बहुत श्रद्धा बची हुई है, वह भी खतम हो जायगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनातनियों द्वारा ही धर्महानि

हमको समझना चाहिए कि आखिर धर्म का संदेश किसके लिए है ? चन्द लोगों के लिए है या दुनिया के लिए ? हम आपसे कहना चाहते हैं कि हम जब वेद का अध्ययन करना चाहते थे, तब ऋग्वेद का उत्तम संस्करण, सायण-भाष्य के साथ हमें मैक्समूलर का किया हुआ मिला। दूसरा कोई उतना अच्छा नहीं मिला। यह बात तो मैं कोई तीस-बत्तीस साल पहले की कह रहा हूँ। अब तो पूना के तिलक-विद्यापीठ ने सायण-भाष्य के साथ ऋग्वेद का अच्छा संस्करण निकाला है। परन्तु उन दिनों तो मैक्समूलर का ही सबसे उत्तम संस्करण मिलता था। उसमें कम-से-कम गलतियाँ, उत्तम छपाई, सस्वर, शुद्ध स्वर के साथ उच्चारण था। एक जमाना था, जब वेद के अध्ययन के लिए यहाँ पर कुछ प्रतिबन्ध लगाया गया था; लेकिन उन दिनों लेखन-कला नहीं थी। छापने की कला तो थी ही नहीं। उन दिनों उच्चारण ठीक रहें, पाठ-भेद न हों और वेदों की रक्षा हो, इस दृष्टि से वैसा किया गया होगा। उस जमाने की बात अगर कोई इस जमाने में करेगा और कहेगा कि वेदाध्ययन का अधिकार केवल ब्राह्मण को ही है, दूसरों को नहीं, तो वह मूर्खता की बात होगी। वेदों का अच्छा अध्ययन जर्मनी में हुआ है; रूस में, फ्रांस में और इंग्लैंड में भी हुआ है। ऋग्वेद के ही नहीं, बल्कि सारे वेदों के सब मंत्रों की सूची और संग्रह ब्रूमफील्ड नाम के लेखक ने बहुत अच्छे ढंग से किया है। उसकी तुलना में उतना अच्छा दूसरा ग्रंथ नहीं मिलेगा। दूसरे ऐसे बीसों ग्रंथों का हम नाम ले सकते हैं। वे सारे ग्रंथ हाथ में रखकर उनके आधार पर ऋग्वेद का अध्ययन करने में हमें मदद मिली है। अगर इन दिनों कोई पुरानी बात करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, तो उसका मतलब यह हुआ कि हम समझते ही नहीं कि जमाना क्या है। जैसे-जैसे जमाना बदलता है, वैसे-वैसे बाह्यरूप भी बदलना पड़ता है, लेकिन हमारे सनातन-धर्मी संकुचित लोगों ने सनातन-धर्म का जितना नुकसान किया है, उतना नुकसान शायद ही दूसरे किसीने इस धर्म का किया हो।

करीब सौ साल पहले की बात है। जबरदस्ती से सैकड़ों कश्मीरी लोग मुसलमान बनाये गये थे। वह बात तो जबरदस्ती की थी, लेकिन उन लोगों को पश्चात्ताप हुआ। उन्होंने फिर से हिन्दू-धर्म में आना चाहा। उन्होंने काशी के ब्राह्मणों से पूछा, तो उन्होंने उनको वापस लेने से इनकार किया और कहा कि ऐसे भ्रष्ट लोगों को हमारे धर्म में स्थान नहीं है, हम उनको नहीं ले सकते! लेकिन नोआखाली इत्यादि में जो कांड हुआ उसमें सैकड़ों हिन्दू जबरदस्ती से मुसलमान हो गये, तो उनको वापस लेने में काशी के पंडितों को शास्त्र में आधार मिल गया और वे उनको वापस लेने के लिए उत्सुक हो गये। यह बात सौ साल पहले हमको नहीं सूझी थी, अब सूझ गयी है। जिसको समय पर बुद्धि आती है, उसीको ज्ञानी कहते हैं। उसीसे धर्म की रक्षा होती है।

मनु का धर्म मानवमात्र के लिए

बहुत आश्चर्य की बात है कि इन दिनों हिन्दू-धर्म का शायद बहुत ही उत्तम आदर्श जिन्होंने अपने जीवन में रखा, उनको, महात्मा गांधीजी को, सनातनी लोग धर्म-विरोधी कहते हैं। हम समझते हैं कि हिन्दू-धर्म का बचाव और इज्जत जितनी गांधीजी ने की, उतनी शायद ही दूसरे किसी व्यक्ति ने पिछले एक हजार साल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में की होगी। लेकिन ऐसे शख्स को सनातनी हिन्दू लोग धर्म का विरोधी मानते हैं और अपने को धर्म का रक्षक मानते हैं। यह बड़ी भयानक दशा है। इन सनातनियों को समझना चाहिए कि जिस धर्म को वे प्यार करते हैं, उस धर्म को उनके ऐसे कृत्य से बड़ी हानि पहुँचती है। जब कि हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता मिली है और हिंदुस्तान की हरएक बात की तरफ दुनिया की निगाह लगी हुई है, हिंदुस्तान से दुनिया को आशा है, तब ऐसी घटना घटती है, तो दुनिया पर उसका क्या असर होगा, इसे आप जरा सोचिये। मनु महाराज ने आशा प्रकट की थी और मैंने कल ही उनका यह श्लोक सुनाया था :

एतद्-देश-प्रसूतस्य सकाशाद् अग्र-जन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

पृथ्वी के सब मानव इस देश के लोगों से यदि चरित्र की शिक्षा पायेंगे, तो क्या इसी ढंग से पायेंगे कि वे हमारे नजदीक आना चाहेंगे तो भी हम उन्हें नजदीक नहीं आने देंगे ? जब मनु महाराज ने पृथिव्याम् सर्वमानवाः कहा, तो उन्होंने अपने दिल की उदारता ही प्रकट की। मनु ने जो धर्म बतलाया था, वह मानव-धर्म कहा जाता है। वह धर्म सब मानवों के लिए है। यह ठीक है कि हम अपनी बात दूसरों पर न लादें, परन्तु दूसरे हमारे नजदीक आना चाहते हों, तो हम उन्हें आने भी न दें, यह कैसी बात है ! मैं चाहता हूँ कि इस पर हमारे यहाँ के लोग अच्छी तरह से गौर करें और भागवत-धर्म की प्रतिष्ठा किस चीज में है, इस पर विचार करें।

क्रोध नहीं, दुःख

चंद दिन पहले मैं उड़िया का एक भजन पढ़ रहा था, साल्वेग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का। उसमें कहा है कि मैं तो दीन जाति का यवन हूँ और मैं श्रीरंग की कृपा चाहता हूँ। ऐसा भजन जिसमें है, उस भागवत-धर्म के लिए क्या यह शोभा देता है कि एक स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल हृदय की बहन को मंदिर में आने से रोक दें ? उस बहन के आने से क्या वह मंदिर भ्रष्ट हो जायगा ? मुझे कोई क्रोध नहीं आया, जब उसको वहाँ जाने से इनकार किया गया, परंतु मुझे दुःख हुआ, अत्यन्त दुःख हुआ। आज दिन भर वह बात मेरे मन में थी। मैं नहीं समझता कि इस तरह की संकुचितता हम अपने में रखेंगे, तो हिन्दू-धर्म कैसे बढ़ेगा या उसकी उन्नति कैसे होगी !

देश की भी हानि

आप लोग जानते हैं कि वैदिक-काल में पशु-हिंसा के यज्ञ चलते थे, परंतु भागवत-धर्म ने तो उसका निषेध किया और उसे बंद किया। जगन्नाथदास के 'भागवत' में भी वह बात है। बुद्ध भगवान् ने तो सीधे यज्ञ-संस्था पर ही प्रहार किया था। तब तो वह बात कुछ कटु लगी थी, परंतु उसके बाद हिंदुओं ने उनकी बात मान ली थी और विशेषकर भागवत-धर्म ने उसको स्वीकार किया। इस तरह पुरानी कल्पनाओं का सतत संशोधन करते आये हैं। आज का हिन्दू-धर्म और भागवत-धर्म प्राचीन वैदिक-धर्म में जो कुछ गलत चीजें थीं, उनको सुधार करके बना है। वेदों में तो मुझे ऐसी कल्पना के लिए कोई आधार नहीं मिलता है। फिर भी उस जमाने में पशु-हिंसा चलती थी, यज्ञ में पशु-हिंसा की जाती थी। इस यज्ञ-संस्था पर बुद्ध भगवान् ने एक तरह से प्रहार किया। परंतु गीता ने तो उसका स्वरूप ही बदल दिया और उसे आध्यात्मिक स्वरूप दिया और आज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल ये जप-यज्ञ, तप-यज्ञ, दान-यज्ञ, ज्ञान-यज्ञ आदि सब रूढ़ हो गये हैं। तो, पुरानी संकुचित कल्पना को धर्म के नाम से पकड़ रखना धर्म का लक्षण नहीं है। हिंदू-धर्म का तो सतत विकास होता आ रहा है। इतना विकास-क्षम धर्म दूसरा कोई नहीं होगा। जिस धर्म में छह-छह परस्पर विरोधी दर्शनों का संग्रह है, जिसने द्वैत-अद्वैत को अपने पेट में समा लिया है, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के देवताओं की पूजा को स्थान दिया गया है और जिसमें किसी भी प्रकार के आचार का आग्रह नहीं है, उससे उदार धर्म दूसरा कौन-सा हो सकता है ? हिंदू-धर्म में एक जाति में एक प्रकार का आचार है, तो दूसरी जाति में उससे भिन्न आचार है। एक प्रदेश में एक आचार है, तो दूसरे प्रदेश में भिन्न आचार है। इतना निराग्रही, सर्वसमावेशक और व्यापक धर्म मिला है और फिर भी हम उसे संकुचित बना लेते हैं, तो इसमें हम देश का ही नुकसान करते हैं।

मैं चाहता हूँ कि इस पर आप लोग गौर करें। यही मैं परमेश्वर का उपकार मानता हूँ कि जिन विचारों पर मेरी श्रद्धा है, उन विचारों पर अमल करने की शक्ति वह मुझे देता है। इस तरह भगवान् मुझे निरंतर सद्विचार पर आचरण करने का बल देगा, ऐसी आशा है। मैं मानता हूँ कि आज मंदिर में जाने से इनकार करके मुझे जो एक बड़ा सौभाग्य, जो एक बड़ा लाभ मिला था, उसका मैंने त्याग किया। एक श्रद्धालु मनुष्य को आज मंदिर में प्रवेश करने से रोका गया है, यह बात मैं भगवान् के दरबार में निवेदन करना चाहता हूँ। आप सब लोगों को मेरे भक्ति-भाव से प्रणाम !

◆ ◆ ◆

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच्ची धर्म-दृष्टि

जगन्नाथपुरी,
२२ मार्च, '५५

कल हमने मंदिर-प्रवेश का लाभ लेने से इनकार किया। यह घटना बहुत चिंतनीय है और उसमें जो कुछ विचार रहे हैं, उनकी तरफ मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि उस घटना के विषय में क्षोभयुक्त मनोवृत्ति से कुछ सोचा जाय; बल्कि शांत वृत्ति से सोचा जाय; क्योंकि जिन्होंने हमको प्रवेश देने से इनकार किया, उनके मन में भी धर्म-दृष्टि काम कर रही है और हमने जो प्रवेश करने से इनकार किया, उसमें भी धर्म-दृष्टि काम कर रही थी। यानी दोनों बाजू से धर्म-दृष्टि का दावा किया जा सकता है। अब सोचना इतना ही है कि इस काल में और इस परिस्थिति में धर्म की दृष्टि क्या होनी चाहिए।

गूढ़वाद रूढ़वाद बन गया

मैं कबूल करता हूँ कि एक विशेष जमाने में यह भी हो सकता था कि उपासना के स्थान अपने-अपने लिए सीमित किये जा सकते थे। कहीं एकान्त में ध्यान हो सकता था। जैसे, मैंने कल कहा था कि वेद-रक्षण के लिए एक जमाने में उसके पठन-पाठन पर मर्यादा लगायी थी, पर इस जमाने में उसकी जरूरत नहीं है। आज वैसा करने जाओ, तो वेद के अध्ययन पर ही प्रहार हो जायगा। यही न्याय सार्वजनिक उपासना के स्थानों के लिए भी लागू होता है। जैसे नदी का उद्गम गहन स्थान से, दुर्गम गुहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से होता है, वैसे ही धर्म का उदय, वेद की प्रेरणा, कुछ व्यक्तियों के हृदय के अंदर से होती है। अनादि काल से कुछ विशेष मानवों को, जिनको आर्ष-दर्शन था, धर्म-दृष्टि थी। उसके संगोपन के लिए विशेष एकान्त स्थान वे चाहते होंगे। उन्होंने उस जमाने में यही सोचा होगा कि यह धर्म-दृष्टि ऐसे ही लोगों को समझायी जाय, जो समझ सकते हैं। अन्यथा गलतफहमी होगी, उसे कुछ गलत समझेंगे, इसलिए अधर्म होगा। परिणामस्वरूप उस अति प्राचीन काल में, जब वैदिक-धर्म का आरंभ हुआ था, लोग सोचते होंगे कि कुछ खास मंडलों के लिए ही यह उपासना हो और वह उपासना इस तरह सीमित हो। पर जैसे नदी उस दुर्गम गुहा से, उस अज्ञात स्थान से, बाहर निकलती है, आगे बढ़ती है और मैदान में बहना शुरू करती है, तो वह सब लोगों के लिए सुगम हो जाती है, वैसे ही हमको भी समझना चाहिए कि वैदिक-धर्म की नदी उस दुर्गम स्थान से काफी आगे बढ़ चुकी है और विशेषतः वैष्णवों के जमाने में वह सब लोगों के लिए काफी सुलभ-सुगम हो चुकी है। इसलिए नदी के उद्गम-स्थान में, उसके अल्प-से पानी की पावनता के लिए जो चिंता करनी पड़ती है, वह चिन्ता, जहाँ नदी उद्गम से दूर बहती है और समुद्र के पास पहुँचती है, वहाँ नहीं करनी पड़ती। इसलिए बीच के जमाने में जो वाद था, हिन्दुस्तान में, वह गूढ़वाद था। वह आखिर रूढ़वाद हो गया। फिर गूढ़वाद मिट गया और एकांत ध्यान में चिंतन, सामूहिक भजन, कीर्तन को जगह दे दी गयी। प्राचीन ग्रन्थों में भी लिखा है कि सत्ययुग में एकांत ध्यान-चिंतन करना धर्म है और कलियुग में सामूहिक भजन, नाम-संकीर्तन करना धर्म है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्ति-मार्ग का विकास

परिणाम उसका यह हुआ कि जहाँ तक भारत का सवाल है, यहाँ का भक्ति-मार्ग इतना व्यापक हो गया है, यहाँ तक व्यापक हो गया है, कि उसमें सबका समावेश हो गया। भक्ति के जितने प्रकार हो सकते थे, उन सबके भक्ति-मार्ग प्रकट हो गये। अद्वैत आया, द्वैत आया, विशिष्टाद्वैत आया, शुद्ध अद्वैत आया, केवल अद्वैत आया, द्वैताद्वैत आया, संकेत आया, पूजा आयी, मूर्ति-पूजा आयी, नाम-स्मरण आया और जप-तप भी आया। इस प्रकार जितने अंग हो सकते थे, भक्ति-मार्ग के, वे सारे-के-सारे हिंदू-धर्म में विकसित हो गये और मानवता में बिलकुल फर्क नहीं हो सकता, इस बुनियाद पर भक्ति-मार्ग का अधिष्ठान स्थिर हो गया, दृढ़ हो गया। केवल ध्यानमय जो धर्म था, वह कृष्णार्पणमय होकर फल-त्यागयुक्त सेवामय हो गया। इसलिए भगवान् ने कहा है—"ध्यानात् कर्मफलत्यागः।" यानी ध्यान से भी सेवामय फलत्याग की भक्ति श्रेष्ठ है। लेकिन एक जमाना होता है, जब ध्यान-धारणा करनी होती है। उसके बिना धर्म का आरंभ ही नहीं होता। उसी ध्यान-चिंतन के परिणामस्वरूप नाम-संकीर्तन-मूलक भक्ति-मार्ग और फल-त्यागयुक्त सेवा का मार्ग खुल गया था। इसलिए संभव है कि जिस जमाने में ये मंदिर बने होंगे, उस जमाने में कुछ खास उपासकों को ही उनमें स्थान मिलता होगा। यही धर्म-दृष्टि से उचित है, ऐसा वे मानते होंगे।

अपने पाँव पर कुल्हाड़ी

हमारे सामने सोचने की बात यह है कि आज जब हिन्दुस्तान का भक्ति-मार्ग इतना व्यापक हो चुका है, इतना विकसित हो चुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि उसमें सारे धर्म-संप्रदाय आ गये हैं, उस हालत में हमें अपने-अपने उपासना-स्थान सबके लिए खुले करने चाहिए या नहीं ? मेरी राय है कि अगर हिन्दू-धर्म इस वक्त अपने को सीमित रखने की कोशिश करेगा, संकुचित करेगा, अपने को चंद लोगों तक ही महदूद करेगा, तो वह खुद पर ही प्रहार करेगा और नष्ट होगा, मिट जायगा। इसलिए वैदिक-धर्म का जो रूप था, वैदिक जमाने में, उसे छन्दोबद्ध याने ढँका हुआ कहते थे, वह अब नहीं होना चाहिए। वह अब खुला होना चाहिए। इसलिए प्राचीन काल में जो गुप्त मंत्र होते थे, उनके बदले में कलियुग में राम, कृष्ण, हरि जैसे नाम ही खुले मंत्र के रूप में आ गये। उसमें नाम-स्मरण आ गया। यही उत्तम भक्ति-मार्ग है, ऐसा भक्त कहते हैं। अब जिस सगुण मूर्ति के सामने राम, कृष्ण जैसे खुले मंत्र चले होंगे, उनके उद्देश्य को तो हम समझे नहीं और अपने को ही काटते हैं। इसलिए जगन्नाथ-मंदिर के जो अधिष्ठाता लोग हैं और मंदिर की जिम्मेवारी जो अपने ऊपर मानते हैं, वे भी इस बात पर सोचें, ऐसी मेरी नम्र विनती है। अगर वे इस दृष्टि से सोचेंगे, तो उनके ध्यान में आयेगा कि कल हमने उस फ्रेंच बहन को छोड़कर मंदिर में जाने से इनकार क्यों किया और फिर उनके ध्यान में आयेगा कि कल उन्होंने हमको जो रोका वह धर्म-दृष्टि से ठीक नहीं हुआ। अगर वे विचार करेंगे, तो उनकी समझ में आयेगा कि उन मंदिरों की पवित्रता इसीमें है कि जो भक्तिभाव से आना चाहते हैं, उनको प्रवेश दिया जाय, तभी उनका पतित-पावनत्व सार्थक होगा। ◆ ◆ ◆

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सायं-प्रार्थना-प्रवचन : ३

समन्वय पर प्रहार मत होने दीजिये

जगन्नाथपुरी,
२३ मार्च, '५५

सर्वोदय की दृष्टि

आप सब लोग जानते हैं कि हम सर्वोदय के विचारक कहलाते हैं और भूदान के काम में लगे हुए हैं और उसीके चिंतन में हमारा प्रतिदिन का समय जाता है। इसलिए पूछा जायगा कि इस प्रश्न को हम क्यों इतना महत्त्व दे रहे हैं और तीन-तीन व्याख्यान क्यों दे रहे हैं, तो इसका उत्तर यह है कि यह विषय सर्वोदय के लिए ही नहीं, बल्कि धर्म-विचार के लिए भी, बहुत महत्त्व का है। इसका ठीक निर्णय हमारे मन में न हो, तो केवल धर्म ही नहीं, बल्कि सर्वोदय ही टूट जायगा। मान लीजिये कि हम देशाभिमान की बात करते हैं, तो वह देश-प्रेम बहुत व्यापक चीज जरूर है, पर मानवता की दृष्टि से वह भी छोटी, संकुचित होती है। पर जिसे हम धर्म-भावना कहते हैं, वह मानवता से छोटी चीज नहीं है, मानवता से बड़ी चीज है। धर्म के नाम पर जब हम मानवता से भी छोटे बन जाते हैं, तो हम धर्म को भी संकुचित करते हैं और धर्म की जो मुख्य चीज है, उसे छोड़ते हैं। धार्मिक पुरुष की धर्म-भावना में न सिर्फ मानव के लिए ही प्रेम होता है, असंकोच होता है, बल्कि प्राणीमात्र के लिए प्रेम होता है और असंकोच होता है। अपने-अपने खयाल से और मन के संतोष के लिए मनुष्य अलग-अलग उपासना करते हैं। इस तरह उपासनाएँ अलग-अलग बन जाती हैं। उन उपासनाओं के मूल में जो भक्ति है, वह सबसे बड़ी चीज है, मानवता से भी व्यापक है। लोग हमसे पूछते हैं कि क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वोदय-समाज में कोई मुसलमान नहीं रहेंगे, हिंदू नहीं रहेंगे, क्रिस्ती नहीं रहेंगे, तो हम जवाब देते हैं कि ये सारे-के-सारे रहेंगे और ये सब सर्वोदय के अंग हैं। इसका मतलब यह नहीं कि हिंदू, मुस्लिम या क्रिस्ती-धर्म के नाम पर जो गलत धारणाएँ चल पड़ीं, वे भी इसमें होंगी। वे तो इसमें नहीं रहेंगी, बल्कि उपासना की जो भिन्न-भिन्न प्रणालियाँ हैं और जो व्यापक भावना है, वह सर्वोदय में अमान्य नहीं है। लेकिन सर्वोदय में यह नहीं हो सकेगा कि एक तरह की उपासना करने का ढंग कोई दूसरे किसी उपासना के स्थान में, मंदिर में, उपासना करने के लिए जाना चाहे तो उसे रोका जाय। चाहे वह भिन्न उपासना क्यों न करता हो, उसे रोकना नहीं चाहिए, चाहे हिन्दू का मंदिर हो, चाहे मुसलमान का मंदिर हो, चाहे क्रिस्तियों का मंदिर हो, या दूसरे किसीके मंदिर हों। जो उपासना के लिए एक मन्दिर में जाना चाहता है, वह उपासना के लिए दूसरे किसी भी मन्दिर में न जाय, ऐसा नहीं कह सकते। जैसी रुचि होगी, वैसे लोग जायँगे। इस तरह से भिन्न-भिन्न उपासना के मन्दिरों में लोग जायँगे और सर्वोदय-समाज में यह किसीके लिए लाजिम नहीं होगा कि खास वह किसी फलाने मंदिर में ही जाय। एक मंदिर में जाकर प्रेम से उपासना करनेवाला दूसरे मंदिर में भी अगर जाना चाहता है, प्रेम से उस उपासना में योग देना चाहता है, प्रेम से उस उपासना को जानना चाहता है, तो उसे रोकना अत्यन्त गलत चीज है।

उपासना के बंधन नहीं

आप लोगों ने रामकृष्ण परमहंस का नाम जरूर सुना होगा और आप जानते हैं कि पिछले सौ साल में जो महान् पुरुष हिन्दू-धर्म में पैदा हुए उनमें अग्रगण्य पुरुषों में उनकी गिनती होती है। उन्होंने विभिन्न धर्मों की उपासनाओं का अध्ययन किया था और उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपासनाओं में जो अनुभूतियाँ आयीं, उनका चिन्तन-मनन वे करते थे। मैं अपने लिए भी यह बात कहता हूँ, यद्यपि अधिक-से-अधिक अध्ययन मैंने हिन्दू-धर्म का किया है, तो भी दूसरे सब धर्मों का भी प्रेम से, गहराई से मैंने अध्ययन किया है। उनकी विशेषताओं को देखने की कोशिश मैंने की है और उनमें जो सार है, उसको ग्रहण किया है। यह जो रामकृष्ण परमहंस ने किया था और मेरे जीवन में भी जो बात है, वह अगर हम लोगों की गलती नहीं है, तो फिर समझने की जरूरत है कि किसी मनुष्य को उपासना का अध्ययन, उसका अनुभव और लाभ लेने से रोकना गलत है। हम यह नहीं कह सकेंगे कि तुम एक दफा तय कर लो कि तुम्हें राम की उपासना करनी है या कृष्ण का नाम लेना है, इसलाम का नाम लेना है या क्राइस्ट के पीछे जाना है, यह तय कर लो, फिर दूसरे मंदिर में मत जाओ। यह कहना उपासना को मानवता की अपेक्षा संकुचित करना है। उपासना मानवता से छोटी चीज नहीं है। मानवता के पेट में वह नहीं समा सकती; बल्कि मानवता से वह बहुत बड़ी चीज है, कम नहीं है। इस दृष्टि से यह सवाल बहुत अहम हो जाता है, महत्त्व का हो जाता है और हम चाहते हैं कि इस पर लोग बहुत गहराई से सोचें।

अभी उड़ीसा में प्रवेश करते ही एक क्रिस्ती भाई ने हमको प्रेम से 'न्यू टेस्टामेंट' भेट की। 'न्यू टेस्टामेंट' मैं कई दफा पढ़ चुका हूँ, परन्तु उन्होंने प्रेम से दी, इसलिए उसको फिर से पढ़ गया। पढ़ने का मतलब यह तो नहीं होता कि उसमें जो अच्छी चीज है, उसको ग्रहण नहीं करना है या उस उपासना-पद्धति में जो सार है, उससे लाभ नहीं उठाना है। यह ठीक है कि जिस उपासना में हम पले, उसका परिणाम हमारे ऊपर रहता है, उसको मिटाना नहीं चाहिए। पर दूसरी उपासना से लाभ नहीं उठाना चाहिए, यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात गलत है। उपासना को संकुचित नहीं बनाना चाहिए। उससे उसमें न्यूनता आ जाती है। कुछ लोग यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि हरिजनों को तो हम मंदिर में प्रवेश देने को राजी हो गये, अब क्रिस्तियों, मुसल्मानों को क्यों आने देंगे? तो हमको समझना चाहिए कि उपासना में इस तरह की मर्यादा नहीं होनी चाहिए। उपासनाएँ एक-दूसरी के लिए परिपोषक होती हैं। जीवन में एक ही मनुष्य बाप के नाते काम करता है, भाई के नाते काम करता है, बेटे के नाते भी काम करता है। इसी तरह जिनको विविध अनुभव हैं, वे परमेश्वर को भी बाप समझकर बाप के नाते उसकी उपासना कर सकते हैं, भाई के नाते उपासना कर सकते हैं, बेटा समझकर उपासना कर सकते हैं। परमेश्वर की उपासना पिता के रूप में, माता के रूप में कर सकते हैं।

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।"

अब उससे यह नहीं कहा जा सकता कि या तो तुम परमेश्वर को पिता ही कहो या माता ही कहो या फिर बेटा ही कहो। परमेश्वर तीनों एक साथ कैसे हो सकता है—ऐसा कहें, तो जब एक सामान्य मनुष्य भी बाप, बेटा और भाई हो सकता है, तो परमेश्वर वैसा क्यों नहीं हो सकता? इस तरह से परमेश्वर की अनेक तरह से उपासना हो सकती है। इसलिए समन्वय की कल्पना को सर्वोत्तम कल्पना के तौर पर सब धर्म मान्य करते हैं। इस दृष्टि से हम जब इस घटना के विषय में सोचते हैं, तो हम समझ सकेंगे कि इससे समन्वय पर ही प्रहार होता है, और जहाँ समन्वय पर प्रहार होता है, वहाँ सब तरह की उपासनाओं पर भी प्रहार होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वोदय और भूदान-साहित्य

(विनोबा)

गीता-प्रवचन	१—०
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	१—०
त्रिवेणी	०—८
साहित्यिकों से	०—८
शिक्षण-विचार	१—४
कार्यकर्ता-वर्ग	०—८
विनोबा-प्रवचन	०—१२
सर्वोदय के आधार	०—४
विनोबा के विचार	३—०
पाटलिपुत्र में	०—५
एक बनो और नेक बनो	०—२
गाँव के लिए आरोग्य-योजना	०—२

(धीरेन मजूमदार)

शासन-मुक्त समाज की ओर	०—६
युग की महान् चुनौती	०—४
नयी तालीम	०—८
ग्रामराज	०—५

(श्रीकृष्णदास जाजू)

संपत्तिदान-यज्ञ	०—४
व्यवहार-शुद्धि	०—६

(दादा धर्माधिकारी)

साम्ययोग की राह पर	०—४
मानवीय क्रान्ति	०—४
क्रांति का अगला कदम	०—४

(जे० सी० कुमारप्पा)

गाँव-आंदोलन क्यों ?	३—८
गांधी अर्थ-विचार	१—०
श्रममीमांसा और अन्य प्रबंध	०—१२
यूरोप : गांधीवादी दृष्टि से	०—१२

(अन्य लेखक)

जीवनदान	०—४
सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र	०—४
श्रमदान	०—४
विनोबा के साथ	१—०
पावन-प्रसंग	०—६
भूदान-आरोहण	०—८
गो-सेवा की विचारधारा	०—८
गाँव का गोकुल	०—४
भूदान-दीपिका	०—२
साम्ययोग का रेखाचित्र	०—२
सन्त विनोबा की आनन्द-यात्रा	१—८
सुन्दरपुर की पाठशाला का पहला घंटा	०—१२
सबै भूमि गोपाल की (नाटक)	०—४
भूमि-क्रांति का तीर्थ : कोरापुट	०—४
धरती के गीत	०—१
नवभारत	४—०
पूर्व बुनियादी तालीम	१—०

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

रा ज घा ट, का शी

मुद्रक : पं० पृथ्वीनाथ भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्पृश्यतारूपी राक्षस का नाश करने के प्रयत्न में मेरी अपनी हार्दिक कामना केवल यही नहीं है कि हिन्दुओं में ही भ्रातृभाव स्थापित किया जाय, बल्कि मुख्यतः मेरी यह कामना है कि मानव मात्र में भ्रातृभाव स्थापित किया जाय—भले वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, पारसी हो या यहूदी हो। संसार में जितने भी महान् धर्म हैं, उन सबके बुनियादी सत्य में मेरा विश्वास है मैं मानता हूँ कि वे ईश्वरदत्त हैं और मैं यह भी मानता हूँ कि जिन्हें इन धर्मों का प्रकाश मिला उनके लिए ये आवश्यक थे। और मेरा यह विश्वास है कि यदि हम सब केवल विभिन्न धर्मों व पद्धतियों या उनके अनुयायियों की दृष्टि से न देखें, तो हमें पता चलेगा कि वे सब मूलतः एक हैं और एक-दूसरे के सहायक हैं।

—गांधीजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri